वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 299

सरस्वती-लक्ष्मी आराधना

–संकलनकर्त्री–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

– प्रकाशक –

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280994

Website : www.jambudweep.org

E-mail : rk195057@yahoo.com

द्वितीय संस्करण आश्विन शुक्ला पूर्णिमा मूल्य

1100 प्रतियाँ 11 अक्टूबर 2011 10/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशन :-

पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

-: सम्पादक :-

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण (सन् 2008)-1100 प्रतियाँ

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

जैनशासन में चौबीस तीर्थंकर होते हैं तथा उन सभी के गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान एवं निर्वाण ये पाँच कल्याणक माने जाते हैं, इनमें से केवलज्ञानकल्याणक होने पर सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से धनकुबेर दिव्य समवसरण की रचना करता है, अनेकानेक दिव्य विभूतियों से समन्वित उस समवसरण की यह भी एक महान विशेषता होती है कि उसमें सरस्वती-लक्ष्मी देवी भगवान के श्रीविहार के समय आगे-आगे चलती हैं, जिससे समवसरण की शोभा और अधिक वृद्धिंगत हो जाती है।

इन देवियों की आराधना आदि करने से मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। सरस्वती माता की पूजा-वंदना बुद्धि को वृद्धिंगत करती है तथा लक्ष्मी देवी की पूजा भक्तों को धनसम्पत्ति प्रदान करने में समर्थ है।

इस छोटी सी पुस्तक ''सरस्वती-लक्ष्मी आराधना'' में दोनों देवियों की अभिषेक विधि, पूजन, शृंगार की विधि, आरती, भजन आदि प्रकाशित हैं, इसके माध्यम से आप सभी भक्ति करके अपने सभी इच्छित कार्यों की सिद्धि करें, यही इसकी सार्थकता है।

तीर्थ विकास की प्रेरणास्रोत

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि– आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति– अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र–** गोयल, **नाम–** कु. मैना

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत– ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा– चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम– क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा– वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व– अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा– हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली

तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा– भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा– पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा– 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा– जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामनहै।

पुस्तक की संकलनकर्त्री

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नाम – प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

दीक्षा पूर्व नाम – ब्र. कु. माधुरी शास्त्री

जन्मतिथि – 18-5-1958 (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)

जन्मस्थान – टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

माता-पिता – श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन

भाई – चार (कैलाशचंद, स्व. प्रकाशचंद, सुभाषचंद एवं कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन)

बहन – आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी सहित)

लौकिक शिक्षा – हाईस्कूल

ब्रह्मचर्यव्रत – 25 अक्टूबर 1969-शरदपूर्णिमा को जयपुर में 2 वर्ष का ब्रह्मचर्यव्रत एवं सन् 1971, अजमेर में आजन्म ब्रह्मचर्य सुगंध दशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से

धार्मिक अध्ययन – 1972 में सोलापुर से ''शास्त्री'' एवं सन् 1973 में ''विद्यावाचस्पति'' उपाधि की परीक्षा देकर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्णता प्राप्त की।

द्वितीय एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत – सन् 1981 एवं 1987 में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से

आर्यिका दीक्षा – हस्तिनापुर में 13-8-1989, श्रावण शु. 11, रविवार को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से

प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि – सन् 1997 में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के अवसर पर राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।

साहित्यिक योगदान – चारित्रचन्द्रिका ग्रंथ, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति विधान, भक्तामर विधान, समयसार विधान, सोलहकारण विधान, कल्याणमंदिर विधान, पंचकल्याणक तीर्थक्षेत्र विधान आदि शताधिक पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा ''षट्खण्डागम (प्राचीनतम जैन सूत्र ग्रंथ) की संस्कृत टीका एवं ''भगवान ऋषभदेव चरितम्'' की संस्कृत टीका का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार की गाथाओं' एवं कलशकाव्यों का 'कुन्दकुन्दमणिमाला' इत्यादि ग्रंथों का पद्यानुवाद, महावीर स्तोत्रम् की संस्कृत-हिन्दी टीका की रचयित्री। भजन (500 से अधिक), पूजन, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ एवं भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका।

दो शब्द

-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

लोक में एक सूक्ति अति प्रसिद्ध है –

''विद्याधनं सर्वधनं प्रधानं''

अर्थात् विद्यारूपी धन सभी धनों में प्रधान माना जाता है। क्योंकि प्रायः यह देखा जाता है कि कोई अत्यन्त निर्धन व्यक्ति अगर बुद्धि – ज्ञान से सहित है, तो वह अपने बुद्धिचातुर्य के द्वारा आसानी से धनार्जन कर सकता है इसके विपरीत यदि कोई असीमित धन-दौलत का स्वामी है परन्तु वह मूर्ख है – ज्ञान, विद्या, बुद्धि से रहित है तो उसका धन-ऐश्वर्य कोई भी उसे मूर्ख बनाकर उससे छीन सकता है अथवा वह स्वयं ही उस धन को नष्ट कर सकता है अतः प्रत्येक प्राणी के अंदर विद्या का होना नितान्त आवश्यक है, यह विद्या विनय को भी प्रदान करने वाली है।

अब प्रश्न यह है कि विद्या की प्राप्ति के लिए हमें क्या करना चाहिए ? तो बंधुओ! देव-शास्त्र-गुरु की निःस्वार्थ भक्ति से व्यक्ति ज्ञानवान बन जाता है। इसी बात को पुष्ट करने के लिए इस लघु पुस्तिका में माता सरस्वती देवी की पूजा-आराधना करने की विधि बताई गई है तथा साथ ही धन-धान्य प्रदायिनी महालक्ष्मी माता की भी पूजा-विधि इसमें प्रकाशित है। दोनों देवी माताओं की पूजा-भक्ति करके अपने जीवन को ज्ञान और धन-धान्य से विभूषित करें, यही मंगलकामना है।

सरस्वती-लक्ष्मी आराधना

–दोहा–

सरस्वती-लक्ष्मी जहाँ, नितप्रति करें प्रणाम।
पुण्यमयी उस धाम का, समवसरण है नाम।।1।।

–शार्दूलविक्रीडित छंद –

भाषासर्वमयो ध्वनिर्जिनपतेर्दिव्यध्वनिर्गीयते।
आनन्त्यार्थसुभृत् मनोगततमो हंति क्षणात्प्राणिनः।।
दिव्यस्थानगतामसंख्यजनतामाल्हादयन् निःसृतः।
ते दिव्यध्वनयस्त्रिलोकसुखदाः कुर्वन्तु नो मंगलम्।।1॥

–अनुष्टुप् छंद –

तीर्थंकर मुखोद्भूता, द्वादशांगी सरस्वती।
वाग्देवी श्रुतदेवी च, कुर्यात् सर्वस्य मंगलम्।।2।।

तीर्थकृत् श्रीविहारेषु, या लक्ष्मीः पद्मधृत्करा।
सरस्वत्या समं याति, सा कुर्यात् मम मंगलम्।।3।।

(थाली में पुष्पांजलि करें)

सरस्वती माता की अभिषेक विधि

जलाभिषेक–

व्योमापगादितीर्थोद्भवेनातिस्वच्छवारिणा।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम् ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पवित्रतरजलेन सरस्वती देवीं अभिषेचयामि स्वाहा।। उदक.....

इक्षुरसाभिषेक–

सद्यः पीलितपुण्ड्रेक्षुरसेन शर्करादिना।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं इक्षुरसेन सरस्वती देवीं अभिषेचयामि स्वाहा। उदक.....

घृताभिषेक–

कनत्काञ्चनवर्णेन सद्यःसंतप्तसर्पिषा।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सरस्वती देवीं अभिषेचयामि स्वाहा।। उदक.....

दुग्धाभिषेक–

सद्गोक्षीरप्रवाहेन शुक्लध्यानाकरेण वा।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं दुग्धेन सरस्वती देवीं अभिषेचयामि स्वाहा। उदक.....

दध्नाभिषेक–

हिमपिण्डसमानेन दध्ना पुण्यफलेन वा।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं दध्नेतन सरस्वती देवीं अभिषेचयामि स्वाहा। उदक.....

चतुष्कोण कलश जलाभिषेक–

हेमोत्पन्नचतुः कुम्भैर्नानातीर्थाम्बुवारिभिः।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चतुष्कोणकलशेन सरस्वती देवीं अभिषेचयामि स्वाहा। उदक.....

सुगन्धित जलाभिषेक–

दिव्यद्रव्यौघमिश्रेण सुगन्धेनाच्छवारिणा।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं

हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं ह्वीं क्ष्वीं हं सः सुगन्धित जलेन सरस्वतीदेवीं अभिषेचयामि स्वाहा।
उदक.....

–पूर्णार्घ्य –

इतिश्रीभारती जैनीं येऽभिषिच्य यजन्ति ते।
विज्ञाय द्वादशाङ्गानि वै स्युः केवलिनोऽचिरात्।।

उदक.....जिनगृहे जिनवाच महंयजे।
ॐ ह्रीं सरस्वती देव्यै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महालक्ष्मी माता की अभिषेक विधि

–तीर्थोदकाभिषेक (जलाभिषेक) –

व्योमापगादितीर्थोद्भवेनातिस्वच्छवारिणा।
अभिसिञ्चे जगन्मान्यां लक्ष्मीदेवीं श्रियै मुदा।।1।।

ॐ ह्रीं परमपवित्रजलेन महालक्ष्मीं अभिषेचयामि स्वाहा।
अर्घ्य –ॐ ह्रीं लक्ष्मीदेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

–रसाभिषेक –

सद्यःपीलितपुण्ड्रेक्षु - रसेन शर्करादिना।
अभिसिञ्चे जगन्मान्यां, लक्ष्मीदेवीं श्रियै मुदा।।2।।

ॐ ह्रीं परमपवित्ररसेन महालक्ष्मीं अभिषेचयामि स्वाहा।
अर्घ्य –ॐ ह्रीं लक्ष्मीदेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

–घृताभिषेक –

कनत्कांचनवर्णेन, सद्यःसंतप्तसर्पिषा।
अभिसिञ्चे जगन्मान्यां, लक्ष्मीदेवीं श्रियै मुदा।।3।।

ॐ ह्रीं परमपवित्रघृतेन महालक्ष्मीं अभिषेचयामि स्वाहा।
अर्घ्य –ॐ ह्रीं लक्ष्मीदेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

–दुग्धाभिषेक –

सद्गोक्षीरप्रवाहेन, शुक्लध्यानाकरेण वा।
अभिसिञ्चे जगन्मान्यां, लक्ष्मीदेवीं श्रियै मुदा।।4।।

ॐ ह्रीं परमपवित्रदुग्धेन महालक्ष्मीं अभिषेचयामि स्वाहा।
अर्घ्य –ॐ ह्रीं लक्ष्मीदेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

–दध्यभिषेक –

हिमपिण्डसमानेन, दध्ना पुण्यफलेन वा।
अभिसिञ्चे जगन्मान्यां, लक्ष्मीदेवीं श्रियै मुदा।।5।।

ॐ ह्रीं परमपवित्रदध्ना महालक्ष्मीं अभिषेचयामि स्वाहा।
अर्घ्य –ॐ ह्रीं लक्ष्मीदेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

–चतुःकलशाभिषेक –

हेमोत्पन्नचतुःकुम्भैर्नानातीर्थाम्बुपूरितैः ।
अभिसिञ्चे जगन्मान्यां, लक्ष्मीदेवीं श्रियै मुदा।।6।।

ॐ ह्रीं परमपवित्रचतुष्कोणकलशैः महालक्ष्मीं अभिषेचयामि स्वाहा।
अर्घ्य –ॐ ह्रीं लक्ष्मीदेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

–सुगंधितजलाभिषेक –

दिव्यद्रव्यौघमिश्रेण, सुगन्धेनाच्छवारिणा।
अभिसिञ्चे जगन्मान्यां, लक्ष्मीदेवीं श्रियै मुदा।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं ह्वीं क्ष्वीं हं सः सुगंधितजलेन महालक्ष्मीदेवीं अभिषेचयामि स्वाहा।
अर्घ्य –ॐ ह्रीं लक्ष्मीदेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

स्वच्छैस्तीर्थ जलैरतुच्छसहज-प्रोद्गंधिगंधैः सितैः।
सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकैर्गंधोद्गमैरुद्गमैः।।
हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपित शुभैर्दीपैर्विपद्धूपकैः।
धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, लक्ष्मीं समभ्यर्चये।।8।।

ॐ ह्रीं महालक्ष्मीदेव्यै पूर्णार्घ्यं समर्पयामि इति स्वाहा।

सरस्वती माता का शृँगार करते समय निम्न मंत्र एवं स्तुति पढ़ें

ॐ ह्रीं श्री सरस्वतीदेवि! सद्वस्त्रं गृहाण गृहाण स्वाहा।

(वस्त्र पहनाना)

ॐ ह्रीं श्री सरस्वतीदेवि! आभरणं गृहाण गृहाण स्वाहा।

(अलंकार पहनावे)

ॐ ह्रीं श्री सरस्वतीदेवि! तिलकं करोमि स्वाहा।

(माथे में बिन्दी, तिलक लगावे)

–शेर छन्द –

कमलासिनी श्रुतधारिणी माता सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।

है द्वादशांग रूप से निर्मित तेरी काया।
सम्यक्त्व तिलक माथे पे चारित्र की छाया।।

विद्वानों से भी पूज्य तुम माता सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।1।।

जिनवर की मूर्ति तेरे मस्तक पे राजती।
वन्दन करें जो उनकी ज्ञान शक्ति जागती।।

हे श्वेतवस्त्र धारिणी माता सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।2।।

हे शारदा तू ज्ञान की गंगा बहाती है।
वागीश्वरी तू ब्रह्मचारिणी कहाती है।।

कर में है वीणा पुस्तक माला सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।3।।

जो भी तेरी आराधना में लीन होता है।
मिथ्यात्वतिमिर हटा ज्ञान लीन होता है।।

है ''चन्दनामती'' विनत माता सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।4।।

लक्ष्मी देवी का शृँगार करते समय निम्न मंत्र एवं भजन पढ़ें

ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! सद्वस्त्रं गृहाण गृहाण स्वाहा।

(वस्त्र पहनाना)

ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! आभरणं गृहाण गृहाण स्वाहा।

(अलंकार पहनावे)

ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! तिलकं करोमि स्वाहा।

(माथे में बिन्दी, तिलक लगावे)

लक्ष्मी महादेवी का शृंगार करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भंडार भरो जी।। टेक.।।

जिनवर के ये सदा संग रहती हैं।
समवसरण में आगे-आगे चलती हैं।।
उसी वैभव को नमस्कार करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भंडार भरो जी।।1।।

तीर्थंकर की माता को स्वप्न में दिखी थीं।
गज अभिषेक प्राप्त लक्ष्मी जी दिखी थीं।।

लक्ष्मी माता पर जल की धार करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भंडार भरो जी।।2।।

साड़ी पहनाओ और चुनरी ओढ़ाओ।
माथे पे कुंकुम की बिन्दिया लगाओ।।
नाना अलंकारों से शृंगार करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भंडार भरो जी।।3।।

लक्ष्मी को देने वाली यही महामाता हैं।
इनकी आराधना से सब मिल जाता है।।
पूजा में तन-मन-धन उदार करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भंडार भरो जी।।4।।

''चन्दनामती'' जिसने इनका ध्यान धर लिया।
उसी ने वरदहस्त इनका प्राप्त कर लिया।।
जिनवर सहित देवी को प्रणाम करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भण्डार भरो जी।।5।।

अरिहंत देव इनके मस्तक पे विराजे हैं।
जिनको नमन करने से दरिद्रता भागे है।
दीवाली को इनका सब सत्कार करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भण्डार भरो जी।। 6।।

सरस्वती पूजा

रचयित्री–गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी

जिनदेव के मुख से खिरी, दिव्यध्वनी अनअक्षरी।
गणधर ग्रहण कर द्वादशांगी, ग्रंथमय रचना करी।।
इन अंग पूरब की ही रचना रूप सरस्वती मात हैं।
इनकी करूँ मैं अर्चना, ये शास्त्र में विख्यात हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देवि! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देवि!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देवि! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक–चामर छन्द

जैन साधु चित्त सम, पवित्र नीर ले लिया।
स्वर्ण भृंग में भरा, पवित्र भाव मैं किया।।
द्वादशांगमय सरस्वती, मुझे सुबोध दो।
बुद्धि समीचीन हो, उदीत ज्ञान ज्योति हो।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशरादि को घिसाय, स्वर्ण पात्र में भरी।
ताप पाप शांति हेतु, पूजहूँ इसी घरी।।
द्वादशांगमय सरस्वती, मुझे सुबोध दो।
बुद्धि समीचीन हो, उदीत ज्ञान ज्योति हो।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्ररश्मि के समान, धौत स्वच्छ शालि हैं।
पुंज को चढ़ावते, मिले गुणों कि माल है।।
द्वादशांगमय सरस्वती, मुझे सुबोध दो।
बुद्धि समीचीन हो, उदीत ज्ञान ज्योति हो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मोगरा गुलाब चंप केतकी चुनायके।
स्वात्म सौख्य प्राप्त होय, पुष्प को चढ़ावते।।
द्वादशांगमय सरस्वती, मुझे सुबोध दो।
बुद्धि समीचीन हो, उदीत ज्ञान ज्योति हो।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डुकादि व्यंजनों से, थाल को भराय के।
ज्ञानदेवता समीप, भक्ति से चढ़ाय के।।

द्वादशांगमय सरस्वती, मुझे सुबोध दो।
बुद्धि समीचीन हो, उदीत ज्ञान ज्योति हो।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप में कपूर ज्वाल, आरती उतारहूँ।
ज्ञानपूर जैन भारती, हृदय में धारहूँ।।
द्वादशांगमय सरस्वती, मुझे सुबोध दो।
बुद्धि समीचीन हो, उदीत ज्ञान ज्योति हो।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप ले दशांग, अग्निपात्र में हि खेवते।
कर्म भस्म हो उड़े, सुगंधि को बिखेरते।।
द्वादशांगमय सरस्वती, मुझे सुबोध दो।
बुद्धि समीचीन हो, उदीत ज्ञान ज्योति हो।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेब संतरा अनार, द्राक्ष थाल में भरें।
मोक्ष सौख्य हेतु शास्त्र, के समीप ले धरें।।

द्वादशांगमय सरस्वती, मुझे सुबोध दो।
बुद्धि समीचीन हो, उदीत ज्ञान ज्योति हो।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वारि गंध शालि पुष्प, चरु सुदीप धूप ले।
सत्फलों समेत अर्घ्य, से जजें सुयश मिले।।
द्वादशांगमय सरस्वती, मुझे सुबोध दो।
बुद्धि समीचीन हो, उदीत ज्ञान ज्योति हो।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण भृंग नाल से, सुशांतिधार देय के।
विश्वशांति हो तुरंत, इष्ट सौख्य देय के।।
द्वादशांगमय सरस्वती, मुझे सुबोध दो।
बुद्धि समीचीन हो, उदीत ज्ञान ज्योति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

गंध से समस्तदिक् , सुगंध कर रहे सदा।
पुष्प को समर्पिते, न दुःख व्याधि हो कदा।।
द्वादशांगमय सरस्वती, मुझे सुबोध दो।
बुद्धि समीचीन हो, उदीत ज्ञान ज्योति हो।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगाय नमः।

जयमाला

–दोहा–

द्वादशांग हे वाड्.मय ! श्रुतज्ञानामृतसिंधु।
गाऊँ तुम जयमालिका, तरूं शीघ्र भवसिंधु।।1।।

–शंभु छन्द–

जय जय जिनवर की दिव्यध्वनी, जो अनक्षरी ही खिरती है।
जय जय जिनवाणी श्रोताओं को, सब भाषा में मिलती है।
जय जय अठरह महाभाषाएं, लघु सात शतक भाषाएं हैं।
फिर भी संख्यातों भाषा में, सब समझे जिनमहिमा ये हैं।।2।।
जिनदिव्यध्वनी को सुनकर के, गणधर गूँथें द्वादश अंग में।
बारहवें अंग के पाँच भेद, चौथे में चौदह पूर्व भणें।।
पद इक सौ बारह कोटि तिरासी, लाख अठावन सहस पाँच।
मैं इनका वंदन करता हूँ, मेरा श्रुत में हो पूरणांक।।3।।
इक पद सोलह सौ चौंतिस कोटी, और तिरासी लाख तथा
है सात हजार आठ सौ अट्ठासी, अक्षर जिन शास्त्र कथा।।
इतने अक्षर का इक पद तब, सब अक्षर के जितने पद हैं।
उनमें से शेष बचें अक्षर, वह अंगबाह्य श्रुत नाम लहे।।4।।

जो आठ कोटि इक लाख आठ, हज्जार एक सौ पचहत्तर।
चौदह प्रकीर्णमय अंगबाह्य के, इतने ही माने अक्षर।।
यह शब्दरूप और ग्रन्थरूप, सब द्रव्यश्रुत कहलाता है।
जो ज्ञानरूप है आत्मा में, वह कहा भावश्रुत जाता है।।5।।
जिनको केवलज्ञानी जाने, पर वच से नहिं कह सकते हैं।
ऐसे पदार्थ सु अनंतानंत, जो तीन भुवन में रहते हैं।।
उनसे भी अनंतवें भाग प्रमित, वचनों से वर्णित हो पदार्थ।
उन प्रज्ञापनीय से भी अनन्तवें, भाग कथित श्रुत में पदार्थ।।6।।
फिर भी यह श्रुत सब द्वादशांग, सरसों सम इसका आज अंश।
उनमें से भी लवमात्र ज्ञान, हो जावे तो भी जन्म धन्य।।
यह जिन आगम की भक्ती ही, निज पर का भान कराती है।
यह भक्ती ही श्रुतज्ञान पूर्णकर, श्रुतकेवली बनाती है।।7।।
श्रुतज्ञान व केवलज्ञान उभय, ज्ञानापेक्षा हैं सदृश कहे।
श्रुतज्ञान परोक्ष लखे सब कुछ, बस केवलज्ञान प्रत्यक्ष लहे॥
अंतर इतना ही तुम जानो, इसलिए जिनागम आराधो।
स्वाध्याय मनन चिंतन करके, निज आत्म सुधारस को चाखो।।8
इस ढाईद्वीप में कर्मभूमि, इक सौ सत्तर जिनवर होते।
उन सबकी ध्वनि जिन आगम है, इससे जन अघमल को धोते॥
जिनवचपूजा जिनपूजा सम, यह केवलज्ञान प्रदाता है।
नित पूजूँ ध्याऊँ गुण गाऊँ, यह भव्यों को सुखदाता है।।9।।

है नाम भारती सरस्वती, शारदा हंसवाहिनी तथा।
विदुषी वागीश्वरि और कुमारी, ब्रह्मचारिणी सर्वमता।।
विद्वान् जगन्माता कहते, ब्राह्मणी व ब्रह्माणी वरदा।
वाणी भाषा श्रुतदेवी गौ, ये सोलह नाम सर्व सुखदा।।10।।
हे सरस्वती ! अमृतझरिणी, मेरा मन निर्मल शांत करो।
स्याद्वाद सुधारस वर्षाकर, सब दाह हरो मन तृप्त करो।।
हे जिनवाणी माता मुझ, अज्ञानी की नित रक्षा करिये।
दे केवल ''ज्ञानमती'' मुझको, फिर भले उपेक्षा ही करिये।।11।।

–दोहा–

भूत भविष्यत् संप्रति, त्रैकालिक जिनशास्त्र।
उनकी प्रतिकृति रूप मैं, नमूँ सरस्वति मात।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

सब भाषामय सरस्वती, जिनकन्या जिनवाणि।
ज्ञानज्योति प्रगटित करो, माता जगकल्याणि।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

महालक्ष्मी माता की पूजन

रचयित्री-आर्यिका चंदनामती

–स्थापना (शंभु छंद)–

हे लक्ष्मी माता! तव मस्तक पर, प्रभु अरिहंत विराजे हैं।
प्रभु से पावन तेरे तन पर, आभूषण गुण के राजे हैं।।
प्रभु समवसरण में सरस्वती के, साथ सदैव रहा करतीं।
तेरी पूजन से इसीलिए, जनता धनवान बना करती।।1।।

–दोहा–

आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण प्रधान।
इस विधि लक्ष्मी मात का, करूँ यहाँ आह्वान।।2।।

ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् स्वाहा।

–अथ अष्टक (शंभु छंद)–

भौतिक लक्ष्मी आने हेतू, निज घर को स्वच्छ बनाते हैं।
आत्मिक सम्पति पाने हेतू, निज मन को स्वस्थ बनाते हैं।।

हे लक्ष्मी माता! तुम निर्धन को, भी धनवान बनाती हो।
सांसारिक सुख सम्पति देकर, सबको सन्मान दिलाती हो।।1।।
ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! जलं गृहाण गृहाण स्वाहा।

निज तन की शीतलता हेतू, चंदन का लेप लगाते हैं।
निज मन की शीतलता हेतू, चंदन पूजन में चढ़ाते हैं।।
हे लक्ष्मी माता! तुम निर्धन को, भी धनवान बनाती हो।
सांसारिक सुख सम्पति देकर, सबको सन्मान दिलाती हो।।2।।
ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! चंदनं गृहाण गृहाण स्वाहा।

निज तन का सुख पाने हेतू, जाने क्या-क्या हम करते हैं।
आध्यात्मिक अक्षय सुख हेतू, अक्षत पुंजों से जजते हैं।।
हे लक्ष्मी माता! तुम निर्धन को, भी धनवान बनाती हो।
सांसारिक सुख सम्पति देकर, सबको सन्मान दिलाती हो।।3।।
ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! अक्षतं गृहाण गृहाण स्वाहा।

तन की सौंदर्यवृद्धि हेतू, बहु पुष्पों का शृँगार किया।
मन की सौंदर्यवृद्धि हेतू, पूजन में पुष्प का थाल लिया।।
हे लक्ष्मी माता! तुम निर्धन को, भी धनवान बनाती हो।
सांसारिक सुख सम्पति देकर, सबको सन्मान दिलाती हो।।4।।
ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! पुष्पं गृहाण गृहाण स्वाहा।

निज तन की भूख मिटाने को, पकवान बहुत हम खाते हैं।
आत्मा की भूख बढ़ाने को, नैवेद्य थाल हम लाते हैं।।
हे लक्ष्मी माता! तुम निर्धन को, भी धनवान बनाती हो।
सांसारिक सुख सम्पति देकर, सबको सन्मान दिलाती हो।।5।।
ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! नैवेद्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

निज घर का तिमिर मिटाने को, विद्युत के दीप जलाते हैं।
अज्ञान का तिमिर हटाने को, पूजन में दीप जलाते हैं।।
हे लक्ष्मी माता! तुम निर्धन को, भी धनवान बनाती हो।
सांसारिक सुख सम्पति देकर, सबको सन्मान दिलाती हो।।6।।
ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! दीपं गृहाण गृहाण स्वाहा।

निज गृह में सुन्दर धूप जलाकर, उसे सुगंधित करते हैं।
आत्मा को गुण से सुरभित करने, हेतु धूप से जजते हैं।।
हे लक्ष्मी माता! तुम निर्धन को, भी धनवान बनाती हो।
सांसारिक सुख सम्पति देकर, सबको सन्मान दिलाती हो।।7।।
ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! धूपं गृहाण गृहाण स्वाहा।

निज तन की पुष्टि हेतु खट्टे-मीठे फल हम सब खाते हैं।
निज आतम की पुष्टी हेतू, पूजन में उन्हें चढ़ाते हैं।।
हे लक्ष्मी माता! तुम निर्धन को, भी धनवान बनाती हो।
सांसारिक सुख सम्पति देकर, सबको सन्मान दिलाती हो।।8।।
ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! फलं गृहाण गृहाण स्वाहा।

भौतिक सम्मान बढ़ाने को, कितने प्रयत्न हम करते हैं।
"चन्दनामती" अब अर्घ्यथाल ले, ईप्सित फल हम वरते हैं।।
हे लक्ष्मी माता! तुम निर्धन को, भी धनवान बनाती हो।
सांसारिक सुख सम्पति देकर, सबको सन्मान दिलाती हो।।9।।
ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

–दोहा–

स्वर्ण कलश में नीर ले, कर लूँ शांतीधार।
पदयुग लक्ष्मी मात के, दें सबको आधार।।10।।
शांतये शांतिधारा।

पुष्पांजलि के भाव से, लिये पुष्प बहु भांति।
करतीं पुष्पित जगत को, महालक्ष्मी मात।।11।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूँ ऐं महालक्ष्म्यै नमः

जयमाला

–शंभु छंद–

जय जय तीर्थंकर के पद में, रहने वाली लक्ष्मी देवी।
जय जय प्रभु समवसरण में भी, रहने वाली लक्ष्मी देवी।।

जय जय माता श्री सरस्वती के, संग रहतीं लक्ष्मी देवी।
जय जय श्रीदेवी की संज्ञा, धारिणी मात लक्ष्मी देवी।।1।।
इनके मस्तक पर सदा रहें, अरिहंत देव की प्रतिमा हैं।
अरिहंत देव के ही निमित्त से, इनके गुण की गरिमा है।।
ये जिनवर भक्तों को सदैव ही, मालामाल बनाती हैं।
इसलिए जगत के द्वारा ये, लक्ष्मी माँ मानी जाती हैं।।2।।

जो पूज्य जनों की विनय करें, उनके घर में लक्ष्मी आतीं।
जो अविनय करते गुरुजन की, उनकी सम्पत्ति भाग जाती।।
धन लक्ष्मी पाकर मान नहीं, आने पावे यह ध्यान रहे।
इसलिए सदा धन पा करके, दानी बनने का भाव रहे।।3।।

लक्ष्मी देवी की पूजन से, ऐसी सद्बुद्धि मिले मुझको।
निज औ पर का उपकार करूँ, ऐसी ही बुद्धि मिले मुझको।।
जिनधर्म और धर्मायतनों के, लिए दान के भाव रहें।
जिनशासन होवे वृद्धिंगत, मेरे द्वारा यह भाव रहे।।4।।

लक्ष्मी माता के साथ सरस्वति, माता का भी यजन करें।
दिग्भ्रमित न मन होने पाए, इसलिए सरस्वति नमन करें।।
व्यसनों से सदा दूर रहकर, भौतिक सुख का उपभोग करें।
सुख सम्पत्ति पाकर चार दान में, लक्ष्मी का उपयोग करें।।5।।

हे लक्ष्मी माता! तुम मेरे, घर में आकर खुशियाँ भर दो।
मेरे आंगन को अपने वरदानों से पूर्ण सुखी कर दो।।
इस हेतु तुम्हारे दर पर यह, मेरा पूर्णार्घ्य समर्पित है।
जयमाला के माध्यम से माँ, ये आठों द्रव्य समर्पित हैं।।6।।

है यही भाव ''चन्दनामती'', रत्नत्रय की संपति पाऊँ।
उस संपत्ति से मैं शीघ्र तीन, लोकों की संपति पा जाऊँ।।
जो भौतिक सम्पति मिले उसी में, संतोषामृत पान करूँ।
बस श्रेष्ठ निराकुलमन होकर, निज आतम में विश्राम करूँ।।7।।

ॐ ह्रीं महालक्ष्मीदेव्यै जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

।।इत्याशीर्वादः।।

पुनः विसर्जन पाठ करके आरती करें।

सरस्वती माता की आरती

आरति करो रे,
जिनवाणी माता सरस्वती की, आरति करो रे।
द्वादशांगमय श्रुतदेवी का, श्रेष्ठ तिलक सम्यग्दर्शन।
वस्त्र धारतीं चारित के, चौदह पूरब के आभूषण।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
आकार सहित उन श्रुतदेवी की, आरति करो रे।। 1।।

इनके आराधन से ज्ञानावरण कर्म क्षय होता है।
मति श्रुत ज्ञान प्राप्त होकर, अज्ञान स्वयं व्यय होता है।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
तीर्थंकर प्रभु की दिव्यध्वनि की, आरति करो रे।। 2।।

मनपर्ययज्ञानी गणधर भी, श्रुत आराधन करते हैं।
तभी घातिया कर्म नाशकर, केवलज्ञानी बनते हैं।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
कैवल्यमयी शीतलवाणी की, आरति करो रे ।। 3।।

मुनि के अंग पूर्व की महिमा, तो आगम में मिलती है।
सम्यग्दृष्टि आर्यिका ग्यारह, अंगों को पढ़ सकती है।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
सौंदर्यवती माँ सरस्वती की, आरति करो रे।।4।।

शुभ्र वस्त्र धारिणी हंसवाहिनी सरस्वती माता हैं।
शुभ्र ज्ञानकिरणों से युत, ''चंदना'' यही श्रुतमाता हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्रुतज्ञान समन्वित सरस्वती की, आरति करो रे।।5।।

महालक्ष्मी माता की आरती

तर्ज - चांद मेरे आजा.....

आरती लक्ष्मी देवी की-2
धन धान्य की सम्पत्ति देने वाली, माँ की करो आरतिया।।
।।आरती.।।

जिनशासन में जिनवर की, ये भक्त कही जाती हैं।
जो इनकी भक्ती करते, उनके घर में आती हैं।।
आरती लक्ष्मी देवी की।।1।।

प्रभु समवसरण के आगे-आगे लक्ष्मी चलती हैं।
जिससे प्रभु के वैभव में, कुछ कमी न रह सकती है।।
आरती लक्ष्मी देवी की।।2।।

धन वैभव के इच्छुक जन, इनका आराधन करते।
आर्थिक संकट नश जाता, इच्छित फल को वे लभते।।
आरती लक्ष्मी देवी की।।3।।

हे लक्ष्मी माता मुझको, भक्ती का ऐसा फल दो।
लौकिक आध्यात्मिक लक्ष्मी, ''चन्दना'' मेरे मन भर दो।।
आरती लक्ष्मी देवी की।।4।।

सरस्वती स्तोत्र

(प्रतिष्ठातिलक ग्रंथ से)

बारह अंगंगिज्जा, दंसणतिलया चरित्तवत्थहरा।
चोद्दसपुव्वाहरणा, ठावे दव्वाय सुयदेवी।।1।।

आचारशिरसं सूत्र-कृतवक्त्रां सुकंठिकाम्।
स्थानेन समवायांग-व्याख्याप्रज्ञप्तिदोर्लताम् ।।2।।

वाग्देवतां ज्ञातृकथो-पासकाध्ययनस्तनीम्।
अंतकृद्दशसन्नाभि-मनुत्तरदशांगतः ।।3।।

सुनितंबां सुजघनां, प्रश्नव्याकरणश्रुतात्।
विपाकसूत्रदृग्वाद-चरणां चरणांबराम् ।।4।।

सम्यक्त्वतिलकां पूर्व-चतुर्दशविभूषणाम्।
तावत्प्रकीर्णकोदीर्ण-चारुपत्रांकुरश्रियम्।।5।।

आप्तदृष्टप्रवाहौघ-द्रव्यभावाधिदेवताम् ।
परब्रह्मपथादृप्तां, स्यादुक्तिं भुक्तिमुक्तिदाम् ।।6।।

निर्मूलमोहतिमिरक्षपणैकदक्षं,
न्यक्षेण सर्वजगदुज्ज्वलनैकतानम् ।

सोषेस्व चिन्मयमहो जिनवाणि ! नूनं,
प्राचीमतो जयसि देवि ! तदल्पसूतिम् ।।7।।

आभवादपि दुरासदमेव,
श्रायसं सुखमनन्तमचिंत्यम् ।
जायतेऽद्य सुलभं खलु पुंसां,
त्वत्प्रसादत् इहांब ! नमस्ते।।8।।

चेतश्चमत्कारकरा जनानां,
महोदयाश्चाभ्युदयाः समस्ताः।
हस्ते कृताः शस्तजनैः प्रसादात्,
तवैव लोकांब ! नमोस्तु तुभ्यम् ।।9।।

सकलयुवतिसृष्टेरंब ! चूडामणिस्त्वं,
त्वमसि गुणसुपुष्टेर्धर्मसृष्टेश्च मूलम् ।
त्वमसि च जिनवाणि ! स्वेष्टमुक्त्यंगमुख्या,
तदिह तव पदाब्जं, भूरिभक्त्या नमामः।।10।।

सरस्वती स्तोत्र (हिन्दी)

–शंभु छंद –

श्रुतदेवी बारह अंगों से, निर्मित जिनवाणी मानी हैं।
सम्यग्दर्शन है तिलक किया, चारित्र वस्त्र परिधानी हैं।।
चौदह पूर्वों के आभरणों से, सुंदर सरस्वती माता।
इस विध से द्वादशांग कल्पित, जिनवाणी सरस्वती माता।।1।।

श्रुत 'आचारांग' कहा मस्तक, मुख 'सूत्रकृतांग' सरस्वति का।
ग्रीवा है 'स्थानांग' कहा, श्री जिनवाणी श्रुतदेवी का।।
'समवाय अंग' 'व्याख्या प्रज्ञप्ती', माँ की उभय भुजाएं हैं।
द्वय 'ज्ञातृकथांग' 'उपासकाध्ययनांग' स्तन कहलाये हैं।।2।।

नाभी है 'अंतकृद्दशांग' वर नितंब 'अनुत्तरदशांग' है।
वर 'प्रश्नव्याकरण अंग' मात का, जघनभाग कहते श्रुत हैं॥
पादद्वय 'विपाकसूत्रअंग' 'दृष्टिवादांग' कहें श्रुत में।
'सम्यक्त्व' तिलक हैं अलंकार, चौदह पूरब मानें सच में।।3।

'चौदहों प्रकीर्णक' श्रुत वस्त्रों में, बने बेल-बूटे सुंदर।
ऐसी ये सरस्वती माता, जो द्वादशांगवाणी सुखकर।।

संपूर्ण पदार्थों के ज्ञाता, तीर्थंकर की जो दिव्यध्वनी।
सब द्रव्यों के पर्यायों की, 'श्रुतदेवी' अधिष्ठात्रि मानी।।4।।

जो परमब्रह्मपथ अवलोकन, इच्छुक हैं भव्यात्मा उनको।
स्याद्वाद रहस्य बता करके, भुक्ती मुक्ती देती सबको।।
चिन्मयज्योती मोहांधकार, हरिणी हे जिनवाणी माता।
रवि उदय पूर्वदिशी जेत्री, त्रिभुवन द्योतित करणी माता।।5।।

जो अनादि से दुर्लभ अचिन्त्य, आनन्त्य मोक्षसुख है जग में।
हे सरस्वती मातः! वह भी, तव प्रसाद से अतिसुलभ बने।
आश्चर्यकारि स्वर्गादिक सब, ऐश्वर्य प्राप्त हों भक्तों को।
मेरे सब वाञ्छित पूर्ण करो, हे मातः! नमस्कार तुमको।।6।।

संपूर्ण स्त्री की सृष्टी में, चूड़ामणि हो हे सरस्वती!
तुम से ही दयाधर्म की औ, संपूर्ण गुणों की उत्पत्ती।।
मुक्ती के लिए प्रमुख कारण, माँ सरस्वती! मैं नमूँ तुम्हें।
तव चरण कमल में शीश धरूँ, भक्तीपूर्वक नित नमूँ तुम्हें।।7।।

सरस्वती देवी के 108 मंत्र

अर्हद्वक्त्राब्जसंभूतां, गणाधीशावतारितां।
महर्षिधारितां स्तोष्ये, नाम्नामष्टशतेन गां।।1।।

1. ॐ ह्रीं श्री आदिब्रह्ममुखाम्भोज प्रभवायै नमः। 2. ॐ ह्रीं द्वादशांगिन्यै नमः। 3. ॐ ह्रीं सर्वभाषायै नमः। 4. ॐ ह्रीं वाण्यै नमः। 5. ॐ ह्रीं शारदायै नमः। 6. ॐ ह्रीं गिरे नमः। 7. ॐ ह्रीं सरस्वत्यै नमः। 8. ॐ ह्रीं ब्राह्म्यै नमः। 9. ॐ ह्रीं वाग्देवतायै नमः। 10. ॐ ह्रीं देव्यै नमः। 11. ॐ ह्रीं भारत्यै नमः। 12. ॐ ह्रीं श्रीनिवासिन्यै नमः। 13. ॐ ह्रीं आचारसूत्रकृतपादायै नमः। 14. ॐ ह्रीं स्थानसमवायांगजंघायै नमः। 15. ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्ति-ज्ञातृ-धर्मकथांग चारूरूभासुरायै नमः।16. ॐ ह्रीं उपासकांगसन्मध्यायै नमः। 17. ॐ ह्रीं अंतकृद्दशांगनाभिकायै नमः। 18. ॐ ह्रीं अनुत्तरोपपत्तिदशप्रश्नव्याकरणस्तन्यै नमः।19. ॐ ह्रीं विपाक-सूत्रसद्वक्षसे नमः। 20. ॐ ह्रीं दृष्टिवादांगकंधरायै नमः। 21. ॐ ह्रीं परिकर्ममहासूत्रविपुलांसविराजितायै नमः। 22. ॐ ह्रीं चन्द्रमार्तंडप्रज्ञप्तिभास्वद्बाहुसुबल्यै नमः।

23. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसागरप्रज्ञप्तिसत्करायै नमः। 24. ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्तिविभ्राजत्पंचशाखामनोहरायै नमः। 25. ॐ ह्रीं पूर्वानुयोगवदनायै नमः। 26. ॐ ह्रीं पूर्वाख्यचिबुकांचितायै नमः। 27. ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वसन्नासायै नमः। 28. ॐ ह्रीं अग्रायणीयदंतायै नमः। 29. ॐ ह्रीं वीर्यानुप्रवाद-अस्तिनास्ति-प्रवादोष्ठायै नमः। 30. ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादकपोलायै नमः। 31. ॐ ह्रीं सत्यप्रवादरसनायै नमः। 32. ॐ ह्रीं आत्मप्रवाद-महाहनवे नमः। 33. ॐ ह्रीं कर्मप्रवादसत्तालवे नमः। 34. ॐ ह्रीं प्रत्याख्याननललाटायै नमः। 35. ॐ ह्रीं विद्यानुवाद-कल्याणनामधेयसुलोचनायै नमः। 36. ॐ ह्रीं प्राणावाय-क्रियाविशालपूर्वभ्रूधनुर्लतायै नमः।37. ॐ ह्रीं लोकबिन्दुमहा-सारचूलिकाश्रवणद्वयायै नमः। 38. ॐ ह्रीं स्थलगाख्यल-सच्छीर्षायै नमः। 39. ॐ ह्रीं जलगाख्यमहाकचायै नमः। 40. ॐ ह्रीं मायागतसुलावण्यायै नमः।41. ॐ ह्रीं रूपगाख्य-सुरूपिण्यै नमः। 42. ॐ ह्रीं आकाशगतसौंदर्यायै नमः। 43. ॐ ह्रीं श्रीकलापिसुवाहनायै नमः। 44. ॐ ह्रीं निश्चय-व्यवहारदृङ्नूपुरायै नमः। 45. ॐ ह्रीं बोधमेखलायै नमः।

46. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रशीलहारायै नमः। 47. ॐ ह्रीं महोज्ज्वलायै नमः। 48. ॐ ह्रीं नैगमामोघकेयूरायै नमः। 49. ॐ ह्रीं संग्रहानघचोलकायै नमः। 50. ॐ ह्रीं व्यवहारोद्घ-कटकायै नमः। 51. ॐ ह्रीं ऋजुसूत्रसुकंकणायै नमः। 52. ॐ ह्रीं शब्दोज्ज्वलमहापाशायै नमः। 53. ॐ ह्रीं समभिरूढमहांकुशायै नमः। 54. ॐ ह्रीं एवंभूतसन्मुद्रायै नमः। 55. ॐ ह्रीं दशधर्ममहाम्बरायै नमः। 56. ॐ ह्रीं जपमालाल-सद्हस्तायै नमः। 57. ॐ ह्रीं पुस्तकांकितसत्करायै नमः। 58. ॐ ह्रीं नयप्रमाणताटंकायै नमः। 59. ॐ ह्रीं प्रमाणद्वयकर्णिकायै नमः। 60. ॐ ह्रीं केवलज्ञानमुकुटायै नमः। 61. ॐ ह्रीं शुक्लध्यानविशेषकायै नमः। 62. ॐ ह्रीं स्यात्कारप्राणजीवन्त्यै नमः। 63. ॐ ह्रीं चिदुपादेयभाषिण्यै नमः। 64. ॐ ह्रीं अनेकांतात्मकानंदपद्मासननिवासिन्यै नमः। 65. ॐ ह्रीं सप्तभंगीसितच्छत्रायै नमः।66. ॐ ह्रीं नयषट्क-प्रदीपिकायै नमः। 67. ॐ ह्रीं द्रव्यार्थिकनयानूनपर्यायार्थिक-चामरायै नमः। 68. ॐ ह्रीं कैवल्यकामिन्यै नमः। 69. ॐ ह्रीं ज्योतिर्मय्यै नमः। 70. ॐ ह्रीं वाङ्मयरूपिण्यै नमः।

71. ॐ ह्रीं पूर्वापराविरुद्धायै नमः। 72. ॐ ह्रीं गवे नमः। 73. ॐ ह्रीं श्रुत्यै नमः। 74. ॐ ह्रीं देवाधिदेवतायै नमः। 75. ॐ ह्रीं त्रिलोकमंगलायै नमः। 76. ॐ ह्रीं भव्यशरण्यायै नमः। 77. ॐ ह्रीं सर्ववंदितायै नमः। 78. ॐ ह्रीं बोधमूर्तये नमः। 79. ॐ ह्रीं शब्दमूर्तये नमः। 80. ॐ ह्रीं चिदानन्दैक-रूपिण्यै नमः। 81. ॐ ह्रीं शारदायै नमः। 82. ॐ ह्रीं वरदायै नमः। 83. ॐ ह्रीं नित्यायै नमः।84. ॐ ह्रीं भुक्तिमुक्तिफलप्रदायै नमः। 85. ॐ ह्रीं वागीश्वर्यै नमः। 86. ॐ ह्रीं विश्वरूपायै नमः। 87. ॐ ह्रीं शब्दब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः। 88. ॐ ह्रीं शुभंकर्यै नमः। 89. ॐ ह्रीं हितंकर्यै नमः। 90. ॐ ह्रीं श्रीकर्यै नमः। 91. ॐ ह्रीं शंकर्यै नमः। 92. ॐ ह्रीं सत्यै नमः। 93. ॐ ह्रीं सर्वपापक्षयंकर्यै नमः। 94. ॐ ह्रीं शिवंकर्यै नमः। 95. ॐ ह्रीं महेश्वर्यै नमः। 96. ॐ ह्रीं विद्यायै नमः। 97. ॐ ह्रीं दिव्यध्वन्ये नमः। 98. ॐ ह्रीं मात्रे नमः। 99. ॐ ह्रीं विद्वदाल्हाददायिन्यै नमः। 100. ॐ ह्रीं कलायै नमः। 101. ॐ ह्रीं भगवत्यै नमः। 102. ॐ ह्रीं दीप्तायै नमः। 103. ॐ ह्रीं सर्वशोकप्रणाशिन्यै नमः। 104. ॐ ह्रीं

महर्षिधारिण्यै नमः। 105. ॐ ह्रीं पूतायै नमः। 106. ॐ ह्रीं गणाधीशावतारितायै नमः। 107. ॐ ह्रीं ब्रह्मलोकस्थिरावासायै नमः। 108. ॐ ह्रीं द्वादशाम्नाय देवतायै नमः।

इदमष्टोत्तरशतं, भारत्याः प्रतिवासरं।
यः प्रकीर्तयते भक्त्या, स वै वेदांतगो भवेत्।।1।।

कवित्वं गमकत्वं च , वादितां वाग्मितामपि।
समाप्नुयादिदं स्तोत्र-मधीयानो निरंतरं।।2।।

आयुष्यं च यशस्यं च, स्तोत्रमेतदनुस्मरन्।
श्रुतकेवलितां लब्ध्वा, सूरिर्ब्रह्म भजेत्परं।।4।।

सरस्वती स्तोत्र

चन्द्रार्क-कोटिघटितोज्ज्वल-दिव्य-मूर्ते!
श्रीचन्द्रिका-कलित-निर्मल-शुभ्रवस्त्रे!
कामार्थ-दायि-कलहंस-समाधिरूढे ।
वागीश्वरि! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि!।।1।।

देवा-सुरेन्द्र-नतमौलिमणि-प्ररोचि,
श्रीमंजरी-निविड-रंजित-पादपद्मे !
नीलालके! प्रमदहस्ति-समानयाने!
वागीश्वरि! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि!।।2।।

केयूरहार-मणिकुण्डल-मुद्रिकाद्यैः,
सर्वाङ्ग-भूषण-नरेन्द्र-मुनीन्द्र-वंद्ये!
नानासुरत्न-वर-निर्मल-मौलियुक्ते!
वागीश्वरि! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि!।।3।।

मंजीरकोत्कनककंकणकिंकणीनां,
कांच्याश्च झंकृत-रवेण विराजमाने!
सद्धर्म-वारिनिधि-संतति-वर्द्धमाने!
वागीश्वरि! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि! ।। 4।।

कंकेलिपल्लव-विनिंदित-पाणियुग्मे !
पद्मासने दिवस-पद्मसमान-वक्त्रे !
जैनेन्द्र-वक्त्र-भवदिव्य-समस्त-भाषे !
वागीश्वरि! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि! ।। 5।।

अर्द्धेन्दुमण्डितजटाललितस्वरूपे !
शास्त्र-प्रकाशिनि-समस्त-कलाधिनाथे!
चिन्मुद्रिका-जपसराभय-पुस्तकाङ्के !
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि!।।6।।

डिंडीरपिंड-हिमशंखसिता-भ्रहारे!
पूर्णेन्दु-बिम्बरुचि-शोभित-दिव्यगात्रे!
चांचल्यमान-मृगशाववललाट-नेत्रे !
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि! ।।7।।

पूज्ये पवित्रकरणोन्नत-कामरूपे!
नित्यं फणीन्द्र-गरुडाधिप-किन्नरेन्द्रैः!
विद्याधरेन्द्र-सुरयक्ष-समस्त-वृन्दैः,
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि !।।8।।

सरस्वत्याः प्रसादेन, काव्यं कुर्वन्ति मानवाः।
तस्माच्निश्चल-भावेन , पूजनीया सरस्वती।।9।।

श्री सर्वज्ञ मुखोत्पन्ना, भारती बहुभाषिणी।
अज्ञानतिमिरं हन्ति, विद्या-बहुविकासिनी।।10।।

सरस्वती मया दृष्टा, दिव्या कमललोचना।
हंसस्कन्ध-समारूढा, वीणा-पुस्तक-धारिणी।।11।।
प्रथमं भारती नाम, द्वितीयं च सरस्वती।
तृतीयं शारदादेवी, चतुर्थं हंसगामिनी।।12।।

पंचमं विदुषां माता, षष्ठं वागीश्वरी तथा।
कुमारी सप्तमं प्रोक्ता, अष्टमं ब्रह्मचारिणी।।13।।
नवमं च जगन्माता, दशमं ब्राह्मिणी तथा।
एकादशं तु ब्रह्माणी, द्वादशं वरदा भवेत् ।।14।।

वाणी त्रयोदशं नाम, भाषा चैव चतुर्दशं।
पंचदशं श्रुतदेवी च , षोडशं गौर्निगद्यते।।15।।
एतानि श्रुतनामानि, प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
तस्य संतुष्यति माता, शारदा वरदा भवेत् ।। 16।।

सरस्वती ! नमस्तुभ्यं, वरदे ! कामरूपिणि!
विद्यारंभं करिष्यामि, सिद्धिर्भवतु मे सदा।।17।।

।। इति श्री सरस्वती नाम स्तोत्रम् ।।